गीता प्रश्नोत्तरी

लेखक

स्वामी श्री गम्भीरानन्द सरस्वती जी

महर्षि वेदव्यास गुरुकुल

ठाकराचा पाड़ा रोड़ (पाईप लाईन), जुनी ताडालि,

कामतघर, भिवण्डी, जि.- ठाणे (महाराष्ट्र)

गीता उपदेशसे पूर्व

महाभारत युद्धकी कथा

भारतवर्षकी कहानी। प्रायः पाँच हजार दो सौ वर्ष पहलेकी घटना। भारतवर्षको आर्यावर्त नामसे जाना जाता था। विश्वमें आर्यावर्तका नाम आदरसे लिया जाता था। उस समय आर्यावर्त अनेक राज्योंका सम्मिलित एक अखण्ड साम्राज्य था। राजा भरतका शासन था; जिनकी राजधानी हस्तिनापुर कहलाता था। राजा भरत चक्रवर्ती सम्राट थे। उनके नाम पर ही हमारा देशका नाम 'भारतवर्ष' हुआ। भरत वंशमें राजा सान्तनु हुए। राजा सान्तनुके पूर्वज राजा कुरु के कारण भरत वंशको कुरुवंश भी कहा जाता है। कुरुवंशीयोंको कौरव नामसे जाना जाता है।

भीष्मकी प्रतिज्ञा –

राजा सान्तनुके दो पत्नी थीं। पहली पत्नी गंगाके पुत्रका नाम था देवव्रत जिनका बादमें भीष्म नाम पड़ा। दूसरी पत्नी सत्यवती थी जिनके दो पुत्र हुए - विचित्रवीर्य और चित्राङ्गद। विचित्रवीर्य और चित्राङ्गदका विवाह काशी राजकन्या अम्बिका और अम्बालिकाके साथ हुआ। सन्तान होनेसे पहले विचित्रवीर्य और चित्राङ्गदकी मृत्यु किसी कारणसे हुई थी। यद्यपि भीष्म योग्य एवं बड़े होनेके कारण राजा बनना था लेकिन भीष्मजीने माता सत्यवतीको वचन दिया था कि मैं राजा नहीं बनूँगा और आपके पुत्र

यह भी प्रतिज्ञा किया था कि मैं आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करता हुआ विवाह नहीं करूँगा तथा सिंहासनकी रक्षा करूँगा।

धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा विदुरजीका जन्म –

सत्यवतीके दोनों पुत्रोंकी मृत्युके बाद हस्तिनापुरके सिंहासन रिक्त रहा क्यों कि अम्बिका एवं अम्बालिकाकी कोई सन्तान नहीं थी एवं भीष्मजी भी सिंहासनमें नहीं बैठने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध थे। ऐसी परिस्थितिमें सत्यवतीने महर्षि वेदव्यासजीको प्रार्थना की कि यदि भारतके भविष्यकी सुरक्षा चाहते हो तो अम्बिका और अम्बालिकाके क्षेत्र पुत्र केलिए कृपा करें। महर्षि वेदव्यासजीकी कृपासे धृतराष्ट्र एवं पाण्डुका जन्म हुआ। साथ-साथ दासीके गर्भ से विदुरजीका भी जन्म हुआ।

पाण्डुका राज्य अभिषेक –

धृतराष्ट्र बड़ा होते हुए भी अन्धा होने के कारण पाण्डुको राजा बनाया गया। धृतराष्ट्रका विवाह गान्धारीके साथ एवं पाण्डुका विवाह कुन्तीके साथ हुआ। पुनः पाण्डुका विवाह मद्र देशकी राजकुमारी माद्रीके साथ हुआ था। विदुरजी हस्तिनापुरके महामन्त्रीके रूपमें नियुक्त हुए थे। विदुरजी महान् ज्ञानी, शास्त्रज्ञ, राजनीतिज्ञ होते हुए भगवद् भक्त थे एवं विचारवान थे।

राजा पाण्डुने अपने शौर्य, बल, पराक्रमसे भारतकी सीमाको चारों तरफ फैलाया। भारतवर्षमें पाण्डुका गुणगान होने लगा । पाण्डु सम्राट बने। इसके पश्चात् राजमाता सत्यवती एवं पितामह भीष्मके परामर्शसे राजा पाण्डु कुछ दिन के लिए वन विहारमें गए। वनमें अज्ञात से राजा पाण्डुके द्वारा एक ऋषिकी हत्या हो गयी । मरते समय ऋषिने पाण्डुको अभीशाप दिया था कि पत्नीके सहवासमें तेरी मृत्यु होगी। राजा पाण्डु हस्तिनापुर आकर पितामह भीष्म तथा विदुरजीके समक्ष वनमें घटी हुई घटनाका सम्पूर्ण वृतान्त सुनाया और इस पापका प्रायश्चित के लिए जंगलमें जाने का निर्णय किया। माता सत्यवती एवं पितामह भीष्म अत्यन्त दु:खी हुए तथा वनमें नहीं जाने के लिए परामर्श दिये। किन्तु राजा पाण्डुका निर्णर्य अटल था। राजा पाण्डु प्रायश्चित के लिए वनमें जाते समय उनकी दो पत्नी भी साथ जाने के लिए तैयार हो गयीं ।

कौरव एवं पाण्डवोंका जन्म –

पाण्डुके जाने से पहले हस्तिनापुरके राजसिंहासन पर अन्धा धृतराष्ट्रको कार्यकारी राजा के रूपमें बिठाया गया। कुछ दिनके बाद वनमें कुन्ती पतिदेव पाण्डुके परामर्शसे और देवताओंके प्रसादके रूप मैं तीनों पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुनको जन्म दिया और माद्री भी दो पुत्र नकुल और सहदेवको जन्म दिया । इधर हस्तिनापुरके राजमहल में दुर्योधन आदि सौ पुत्रोंका जन्म हुआ। कुरु

राजकुमारोंमें बड़ा पुत्र युधिष्ठिर था। कौरव सभी राजकुमार होते हुए भी दुर्योधन आदि सौ पुत्र अपनेको कौरव मानते थे एवं युधिष्ठिर आदि पाण्डव कहलाते थे ।

कालचक्रके अनुसार जंगलमें पाँच पाण्डव बड़े होने लगे और महलमें धृतराष्ट्रके सौ पुत्र भी । राजा पाण्डु पाँच पुत्रोंको तपोमय जीवन सिखाया। जीवनका आधार सत्य और धर्म बताया। धर्म मार्गमें चलनेवालोंको शान्ति प्राप्त होती है और अधर्म, अनीतिके मार्गमें चलनेवालोंको दु:ख, अशान्ति ही मिलती है। लेकिन विधिका विधान कुछ और था। ऋषिके अभिशापसे पाण्डुकी मृत्यु हो गयी और साथ-साथ माद्रीकी भी। यद्यपि माद्री और पति राजा पाण्डुके वियोग असहनीय था; फिर भी रानी कुन्ती देवी बड़ी धीरज के साथ पाँच पुत्रों को लेकर हस्तिनापुरमें पहूँची।

कुरु परिवारमें युवराज पदको लेकर कलह –

पाण्डुकी मृत्युके बाद हस्तिनापुरके कार्यकारी राजा धृतराष्ट्र का शासन करनेकी अवधि बढ़ गयी। धृतराष्ट्रको तब तक सिंहासन में आरूढ़ होना पड़ा जब तक एक योग्य युवराज प्राप्त न हो। योग्य युवराजके विषयमें कुरू परिवारमें कलह आरम्भ हो गया। राजकुमार युधिष्ठिर राजा पाण्डुका बड़ा पुत्र, कुरु परिवारका बड़ा पुत्र और

दुर्योधन पाण्डुके बड़ा भाई धृतराष्ट्रके बड़ा पुत्र है। धृतराष्ट्र वर्तमान के कार्यकारी राजा है जो राजा पाण्डुके अनुपस्थितिमें प्रतिनिधित्व कर रहे थे। अतः एक प्रश्न उठा - युवराज पदमें पाण्डु पुत्र युधिष्ठिर को बिठाया जाय अथवा धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनको। सभी प्रकारके विचार विमर्श होने के बाद युधिष्ठिरको युवराज पदमें नियुक्त किया गया।

हस्तिनापुरका विभाजन –

सम्राट धृतराष्ट्र, दुर्योधनके मामा शकुनी , अंगराज कर्ण एवं दुर्योधन आदि सौ भाईओंको यह अच्छा नहीं लगा। धृतराष्ट्रकी इच्छा थी कि मेरा बड़ा पुत्र दुर्योधनका युवराज पदसे अभिषेक हो। स्वप्नकी अपूर्णतासे सभीका मन ईर्ष्यासे भर गया। जैसे-जैसे समय बीतता गया राजकुमारोंमें आपसमें झगड़ा, वाद-विवाद, टकराव आदि बढ़ता गया। धीरे-धीरे वातावरण इतना अशान्त हो गया जैसे किस समय भी आपसमें युद्ध हो सकता है। मामा शकुनी एवं दुर्योधनने पाण्डवोंकी हत्या के लिए एक लाक्षागृहका निर्माण किया एवं उसीमें कुन्तीके साथ पाँच पाण्डवोंको जलाने केलिए षडयन्त्र रचाया गया। लेकिन पाण्डव उसीसे जीवन्त निकले। पुनः हस्तिनापुर वापस नहीं आकर कुछ दिन गुप्त निवास किये। ऐसे समयमें पाञ्चाल देशके राजकुमारी द्रौपदीके साथ पाँच पाण्डवोंका विवाह हुआ था। पाण्डव जब हस्तिनापुर लौटे इससे पहले दुर्योधनको युवराज पद में घोषित किया गया था। अब

दोनों युवराजोंमें संघर्ष आरम्भ हुआ तब पितामह भीष्म एवं विदुरजी विवश होकर राज्यका विभाजन करनेका निर्णय किया।

इन्द्रप्रस्थका निर्माण –

पाण्डवपुत्र युधिष्ठिरको खाण्डवप्रस्थ प्राप्त हुआ जहाँ न कोई मानव है, न कोई प्राणी है, न जलकी सुविधा है। खाण्डवप्रस्थ एक घना जंगल था जहाँ नागोंका वास था। धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनको हस्तिनापुर प्राप्त हुआ जो सभी प्रकार ऐश्वर्यसे समृद्ध नगरी थी। युधिष्ठिर आदि पाँच पाण्डवोंने अपना प्रबल पुरूषार्थसे खाण्डवप्रस्थ में इन्द्रप्रस्थ नामक सुन्दर नगरी बसाया। देवराज इन्द्रकी कृपा एवं मायादानवकी सहायतासे इस नगरीका निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ था।

पाण्डवों और पत्नी द्रौपदीके धर्म बलसे, शौर्यसे, शक्ति और पराक्रमसे निर्मित सुन्दर इन्द्रप्रस्थ नगरीमें प्रजाजन बसने लगे, व्यापार आरम्भ होने लगा, सभी प्रकारसे विकास होकर एक समृद्ध नगरी हो गयी। श्रीकृष्णके परामर्शसे युधिष्ठिर देश-विदेशके समस्त राजाओंको आमन्त्रित करके एक राजसूय यज्ञका आयोजन किया जिसमें युधिष्ठिरको सम्राट पदमें घोषित किया गया। द्रौपदी साम्राज्ञी के रूपमें शोभा पा रही थी । मामा शकुनी, हस्तिनापुर युवराज दुर्योधन, अंगराज कर्ण एवं दु:शासन आदि उपस्थित थे।

आखिर में द्रौपदीकि किसी चर्चासे अपमानित होकर दुर्योधन आदि हस्तिनापुर वापस लौटे।

छल-कपट पूर्वक द्रौपदीको अपमानित करते हुए पाण्डवोंका इन्द्रप्रस्थ नगरी लेने के लिये दुर्योधन और मामा शकुनीने एक द्युतक्रीडाका आयोजन किया। धृतराष्ट्रने विदुरजीके द्वारा सम्राट युधिष्ठिरको द्युत खेलने के लिए आमन्त्रित किया। युधिष्ठिरजी जानते थे कि यह एक षडयन्त्र है फिर भी ज्येष्ठ पिताके आदेश पालन करने के लिए और साथ-साथ क्षत्रीय धर्मका पालन के लिए द्युत क्रीडामें शामिल हुए। मामा शकुनीके द्वारा, छल-कपटसे रचाया गया उस द्युत क्रीडामें सम्राट युधिष्ठिर अपने चार भाई, पत्नी द्रौपदीके साथ राज्य भी हार गये। पाँच पाण्डव एवं द्रौपदी दुर्योधनके दास हो गये। दुर्योधनने अपमानका बदला लेने के लिए द्रौपदीका भरी सभामें वस्त्रहरण किया। आखिरमें यह निर्णय किया गया कि हारा हुआ राज्य तब वापस मिलेगा जब १२ साल वनवास एवं एक साल गुप्त वनवास बिताएँगे।

द्रौपदीके साथ पाण्डव बारह साल वनवास बितानेके बाद मत्स्य देशके राजा विराटके नगरीमें एक साल गुप्त वनवास बिताया। तेरह सालके बाद जब पाण्डव लौटे एवं अपना राज्य इन्द्रप्रस्थ वापस

करनेकी बात आयी तो दुर्योधनने स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया। पाण्डवों और कौरवोंके इस समस्याका समाधान करने के लिए स्वयं श्रीकृष्ण शान्ति दूत बनकर हस्तिनापुर आये। जब दुर्योधनने इन्द्रप्रस्थको लौटानेको मना किया तब श्रीकृष्ण इन्द्रप्रस्थके बदले पाण्डवों के लिए सिर्फ पाँच गाँव माँगा। वह भी अस्वीकार करते हुए कहा - पाँच गाँव तो क्या, एक सुईके अग्रभागके बराबर स्थान नहीं मिलेगा युद्धके बिना। तब पाण्डवोंने अपना अधिकार तथा अपना राज्यको प्राप्त करने के लिए दुर्योधनके युद्धके आमन्त्रणको स्वीकार किया। इस युद्धको ही महाभारत युद्ध नामसे जाना जाता है।

मार्गशीष मास शुक्ल पक्ष एकादशी तिथिके दिन धर्मभूमि कुरुक्षेत्रमें महाभारत युद्ध आरम्भ होनेका निश्चय किया गया। युद्धका नियम, तिथि एवं स्थानका निर्णय करने के लिए पाण्डव एवं कौरव इन दोनों पक्षोंकी ओर से पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, श्रीकृष्ण, राजा द्रुपद, राजा विराट, काशी राजा, युधिष्ठिर, दुर्योधन, मामा शकुनी तथा धृष्टद्युम्न आदि उपस्थित थे।

कौरव पक्षमें ग्यारह अक्षौहिणी सेना एवं पाण्डव पक्षमें सात अक्षौहिणी सेना एकत्रित हुए थे। दोनों पक्षोंमें हजारों रथी, महारथी, लाखों शूरवीर एवं योद्धा सम्मिलित हुए थे। मार्गशीष मास,

एकादशी तिथिमें अठारह अक्षौहिणी सेनाके साथ दोनों विपक्षी कुरूवंशीयोंकी यज्ञभूमि, धर्मभूमिमें युद्धकी इच्छासे एकत्रित हुए। और एक बात है- इस महाभारत युद्धमें कृष्णकी पात्रताको समझना जरूरी है। श्रीकृष्ण किसी भी पक्षकी ओर से युद्ध नहीं कर रहे थे। अर्जुनके निवेदनसे उसके रथका सारथी बने थे। दूसरी बात है- सम्राट धृतराष्ट्र अपने महलमें रहे और उनके पक्षकी ओर से युवराज दुर्योधन प्रतिनिधित्व कर रहे थे। युद्धकी हर परिस्थितिको, योद्धाओं की भावनाको धृतराष्ट्रको जनाने के लिए महर्षि वेदव्यासजी ने धृतराष्ट्रके सारथी सञ्जयको दिव्य चक्षु प्रदान किया था।

अर्जुनका कौटुम्बिक मोह –

युद्धका आरम्भ होने जा रहा था। अर्जुनने अपना सारथी श्रीकृष्णको कहा- अधर्मी, दुर्बुद्धि दुर्योधनके पक्षमें कौन-कौन योद्धा, राजा आदि एकत्रित हुए हैं उसका कल्याण के लिए; मैं उनको देखना चाहता हूँ । इसलिए मेरा रथको वहाँ लेकर रखिये जहाँ मैं देख सकूँ कि किन-किन के साथ मुझे युद्ध करना है। श्रीकृष्ण रथको लेकर उन सेनाओंके बीचमें रखे जहाँ पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य, ताऊ, चाचा, ससूर, भाई, पुत्र, पौत्र, सुहृद, बन्धु आदि रथमें सजे हुए थे। अर्जुन उन सबको जब देखा तो उसके मनमें एक प्रकारसे कौटुम्बिक मोह उत्पन्न हुआ।

श्रीकृष्ण का उपदेश –

अर्जुन हठात् युद्धके परिणामके विषयमें सोचना लगा। उसे एक महान् संहार दिखाई दिया। लाखों स्त्रीयोंकि विधवा, बच्चोंका अनाथ, असहायोंका चित्कार, कुलधर्म-जातिधर्मका विनाश, वर्णसंकरका उत्पन्न, समाजमें अधर्मकी वृद्धिको देखकर युद्ध नहीं करनेका विचार किया। विपक्षीयोंमें पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य आदिको देखकर अर्जुन के हृदयमें बहुत बड़ी ग्लानी हुई कि कैसे बिना सोचे समझे मैं एक बहुत बड़ा अनर्थ करने जा रहा था । अर्जुनने कृष्णको कहा कि- मेरा शरीर काँप रहा है, होंठ सुखा जा रहा है, हाथसे धनुष छूटा जा रहा है, कोई शुभ लक्षण मैं नहीं देख रहा हूँ। अतः मैं युद्ध नहीं करूँगा । ऐसी परिस्थितिमें श्रीकृष्णने अर्जुनको कर्मके विषयमें, ध्यान और भक्तिके विषयमें जो ज्ञान दिया वह गीता ज्ञान नामसे प्रसिद्ध है। वेदव्यास जीने श्रीकृष्णकी इन वाणीको, उपदेशको संग्रह किया और मानव कल्याण हेतु एक धर्मग्रन्थके रूपमें उपस्थापित किया ।

ॐ श्री परमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता प्रश्नोत्तरी

(सबका सभी प्रश्नों का समाधान है इस गीता में)

प्र. १ - गीताका प्रथम अध्यायका क्या नाम है ?
उत्तर - गीताका प्रथम अध्यायका नाम है - 'अर्जुनविषाद योगः' ।

प्र. २ - गीतामें कितने अध्याय हैं ?
उत्तर - गीतामें अठारह अध्याय हैं।

प्र. ३ - गीताके रचयिता कौन हैं ?
उत्तर - गीताके रचयिता महर्षि श्री वेदव्यास जी हैं ।

प्र. ४ - किन दो पक्षोंमें युद्ध हो रहा था ?
उत्तर - कौरव और पाण्डव पक्षमें युद्ध हो रहा था।

प्र. ५ - धृतराष्ट्रके पुत्र कितने हैं और उनमे ज्येष्ठ कौन है ?
उत्तर - धृतराष्ट्रके १००पुत्र हैं और उनमें दुर्योधन ज्येष्ठ है।

प्र. ६ - राजा पाण्डुके कितने पुत्र हैं ? वे कौन-कौन हैं, ज्येष्ठ कौन है ?

उत्तर - राजा पाण्डुके पाँच पुत्र हैं। वे हैं - युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। ज्येष्ठ युधिष्ठिर है।

प्र. ७ - धृतराष्ट्र और पाण्डुका क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर - धृतराष्ट्र और पाण्डु दोनों भाई-भाई हैं। धृतराष्ट्र बड़ा भाई और पाण्डु छोटा भाई है।

प्र. ८ - पाण्डु छोटा भाई होने के बावजूद हस्तिनापुरका राजा क्यों बना ?

उत्तर - धृतराष्ट्र जन्मसे अन्धा होने के कारण पाण्डु छोटा होने के बावजूद राजा बना।

प्र. ९ - राजा पाण्डु होते हुए भी धृतराष्ट्रको फिर कैसे राजा बनाया गया ?

उत्तर - दीर्घ काल तक युद्ध करनेके पश्चात् राजा पाण्डु अपने दोनों पत्नी कुन्ती और माद्रीके साथ कुछ दिन के लिए वन विहारमें गये। ऐसे समयमें अन्धा धृतराष्ट्रको कुछ दिन के लिए 'कार्यकारी राजा' बनाया गया था।

धृतराष्ट्र 'कार्यकारी राजा' होते हुए भी अनिश्चित काल तक क्यों सिंहासनमें आरूढ़ रहे ?
किसी कारणसे ऋषि कदम्मके अभिशापसे राजा पाण्डुकी वनमें मृत्यु हुई। जब तक हस्तिनापुरका युवराजका नाम घोषित नहीं किया गया तब तक धृतराष्ट्रको सिंहासनमें आरूढ़ होना पड़ा।

युधिष्ठिर एवं दुर्योधनमें कौन बड़ा है ?
युधिष्ठिर बड़ा है ।

युधिष्ठिर बड़ा होते हुए भी युवराज बननेमें क्या आपत्ति थी ?
धृतराष्ट्र अपनेको राजा मानके ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधनको युवराज बनाना चाहते थे। जब कि युधिष्ठिर चरित्रवान, धर्मपरायण, नीति कुशल, प्रजा हितकारी एवं राजा पाण्डुके ज्येष्ठ पुत्र थे; फिर भी पुत्र मोहके कारण दुर्योधनको ही राजा बनाना चाहते थे।

युधिष्ठिर युवराज बनने के बाद पुनः दुर्योधनको युवराज क्यों बनाया गया ?

उत्तर - दुर्योधन और मामा शकुनिने लाक्षागृहमें पाण्डवोंको जलाकर नाश करने केलिए एक षडयन्त्र बनाये थे। लेकिन दुर्योधन इसमें सफल नहीं हुआ और पाण्डव बच गए। किन्तु हस्तिनापुरमें सभीको ज्ञात था कि पाण्डव जल गए। अतः दुर्योधनको युवराज बनाना पड़ा ।

प्र.१४ - हस्तिनापुरके राजा सान्तनुके पत्नी कौन है ?

उत्तर - हस्तिनापुरके राजा सान्तनुकी दो पत्नि हैं। एक- गंगा और दुसरी- सत्यवती।

प्र.१५ - गंगा और सत्यवती के कितने पुत्र हैं ?

उत्तर - गंगाका पुत्र देवव्रत है जिनका बादमें नाम हुआ भीष्म। सत्यवतीके दो पुत्र थे- विचित्रवीर्य और चित्राङ्गद।

प्र.१६ - भीष्मजी बड़ा पुत्र होते हुए राजा क्यों नहीं बने ?

उत्तर - सत्यवतीके पिताका यह शर्त था कि सान्तनुके साथ सत्यवती तब विवाह करेगी जब सत्यवतीके होनेवाले भावि पुत्र राजा बनेगा। भीष्मजीको पता चला कि पिता सान्तनु सत्यवतीके सौन्दर्यमें विवश हैं। पिताकी खुशी केलिए भीष्मने सत्यवतीके पिताको वचन दिया कि- मैं बड़ा होते हुए भी आजीवन ब्रह्मचारी बनके रहूँगा, राजा नहीं बनूँगा ।

प्र.१७ - विचित्रवीर्य और चित्राङ्गदकी पत्नीका नाम क्या है और वे किसकी कन्या थीं ?

उत्तर - विचित्रवीर्यकी पत्नीका नाम अम्बिका और चित्राङ्गदकी पत्नीका नाम अम्बालिका था । वे काशीराजकी कन्या थीं।

प्र.१८ - धृतराष्ट्र और पाण्डु किसके पुत्र हैं ?

उत्तर - धृतराष्ट्रकी माता अम्बिका और पाण्डुकी माता अम्बालिका। धृतराष्ट्र और पाण्डु - ये दोनों ऋषि वेदव्यास के क्षेत्र पुत्र हैं।

प्र.१९ - विदुरजीके माता पिता कौन हैं ?

उत्तर - विदुरजी ऋषि वेदव्यासके क्षेत्र पुत्र हैं और माता एक दासी है।

प्र.२० - श्रीकृष्णके माता-पिता कौन थे ?

उत्तर - श्रीकृष्णको जन्म देनेवाले माता-पिता देवकी और वसुदेव थे; लेकिन पालन पोषण करनेवाले माता-पिता गोकुलके रहनेवाले यशोदा एवं नन्द बाबा थे।

प्र.२१ - महाभारत युद्ध कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर - महाभारत युद्ध मार्गशीष मास, शुक्ल पक्ष एकादशी

आरम्भ हुआ था और यह युद्ध कुरुक्षेत्रमें हुआ था।

प्र.२२ - श्रीमद्भगवद्गीता किसने किसीको सुनाया था।
उत्तर - श्रीमद्भगवद्गीताको श्रीकृष्णने अर्जुनको सुनाया था ।

प्र.२३ - श्रीमद्भगवद्गीता किसका धर्म ग्रन्थ है ?
उत्तर - श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ है।

प्र.२४ - श्रीकृष्ण भगवानने गीताका उपदेश कहाँ, कब और कैसी परिस्थितिमें किया था ?
उत्तर - (i)श्रीकृष्ण भगवानने गीताका उपदेश धर्म भूमि कुरूक्षेत्रमें किया था (ii) मार्गशीष मास, शुक्ल पक्ष एकादशी तिथिमें उपदेश किया था (iii) महाभारत युद्धके आरम्भमें, रणक्षेत्र में, दोनों सेनाओं के बीचमें रथको रोककर अर्जुनने जब सभी कुटुम्बजनोंको देखा तब उसके मनमें एक प्रकार विषाद उत्पन्न हुआ यानी युद्धका परिणाम रूप महाविनाश के विषयमें सोचकर युद्ध नहीं करूँगा इसी प्रकार निर्णय किया। ऐसी परिस्थितिमें श्रीकृष्णने गीताका उपदेश किया था ।

प्र.२५ - गीता गन्थके प्रारम्भमें धृतराष्ट्र ने किससे प्रश्न पूछा और क्या कहा ?

उत्तर - गीता ग्रन्थके प्रारम्भमें धृतराष्ट्रने सारथी सञ्जयसे प्रश्न पूछा और कहा- धर्मभूमि कुरुक्षेत्रमें इकट्ठे हुए युद्धकी इच्छा करनेवाले मेरे पुत्र और पाण्डु पुत्रोंने क्या किया ?

प्र.२६ - राजा द्रुपद कहाँके राजा थे और उनका पुत्रका नाम क्या है ?

उत्तर - राजा द्रुपद पाञ्चाल देशके राजा थे और उनका पुत्रका नाम धृष्टद्युम्न है।

प्र.२७ - कौरव सेनाके प्रधान सेनापति कौन थे और पाण्डव सेना के प्रधान सेनापति कौन थे ?

उत्तर - कौरव सेनाके प्रधान सेनापति पितामह भीष्म और पाण्डवोंके प्रधान सेनापति धृष्टद्युम्न थे।

प्र.२८ - सुभद्राके पुत्रका नाम और पतिका नाम क्या है ?

उत्तर - सुभद्राके पुत्रका नाम अभिमन्यु और पतिका नाम अर्जुन है।

प्र.२९ - द्रौपदीका परिचय दो ।

उत्तर - द्रौपदी पाञ्चाल देशके राजा द्रुपदकी पुत्री एवं पाण्डवोंकी पत्नी यानी युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और

सहदेवकी पत्नी होनेके साथ-साथ इन्द्रप्रस्थकी रानी है, कुरुवंशकी कुलवधू भी है।

प्र.३० - धृतराष्ट्रकी पत्नीका नाम और राजा पाण्डुकी पत्नीका नाम बताओ ।

उत्तर - धृतराष्ट्रकी पत्नीका नाम गान्धारी । राजा पाण्डुकी दो पत्नी थीं जिनका नाम कुन्ती देवी और मद्रदेश की राजकुमारी माद्री।

प्र.३१ - कुरु और पाण्डवोंके शास्त्र और शस्त्र विद्याके आचार्य कौन थे ?

उत्तर - द्रोणाचार्य जी।

प्र.३२ - महाभारत युद्ध आरम्भ होनेसे पहले कौन शंख बजाया ?

उत्तर - महाभारत युद्धके आरम्भ होनेसे पहले कौरव वृद्ध, कौरव सेनाके प्रधान सेनापति, महाप्रतापी पितामह भीष्मने शंख बजाया ।

प्र.३३ - श्रीकृष्ण और अर्जुन किस नामका शंख बजाया ?

उत्तर - श्रीकृष्ण पाञ्चजन्य नामक और अर्जुन देवदत्त नामक शंख बजाया

प्र.३४ - युधिष्ठिर और भीमने किस नामका शंख बजाया ?

उत्तर - युधिष्ठिरने अनन्तविजय नामक शंख और भीमने पौण्ड्र नामक महाशंख बजाया।

प्र.३५ - द्रोणाचार्यकी पत्नी का परिचय दो ।

उत्तर - द्रोणाचार्यकी पत्नीका नाम कृपी है जो कृपाचार्यकी बहन थी। कृपाचार्य और कृपी - ये दोनों किसी ऋषिकी सन्तान थे जिनको राजा सान्तनुने बचपनमें पालन पोषण किया था।

प्र.३६ - राजा द्रुपदका द्रोणाचर्यके साथ मित्रता कैसे हुई ?

उत्तर - द्रुपद पाञ्चाल देशके राजा पृषत्के पुत्र थे और द्रोणाचार्य भरद्वाज मुनिके पुत्र थे । राजा पृषत् और भरद्वाज मुनिमें परस्पर मैत्री थी। द्रुपद बालक-अवस्थामें भरद्वाज मुनिके आश्रममें अपने पिताके साथ जाते थे। उस समय द्रोणके साथ द्रुपदकी मित्रता हो गयी थी।

प्र.३७ - द्रोणाचार्य राजा द्रुपदके मित्र होते हुए भी द्रोणाचार्यके वधके लिए राजा द्रुपदने धृष्टद्युम्नको क्यों पैदा किया ?

उत्तर - गुरुकुलमें द्रोण एवं द्रुपद अवश्य मित्र थे। लेकिन द्रोण जब पाञ्चाल देशके राजा बने तब ऋषि, ब्राह्मणपुत्र

द्रोणाचार्यको मित्र नहीं मानते थे। एक समयकी बात है - द्रोणाचार्य राजा द्रुपदके पास गये और मित्र सम्बोधन करते हुए दानके रूपमें एक गाय माँगे। राजा द्रुपदको द्रोणाचार्यके मित्र सम्बोधन बहुत बुरी लगी। भरी सभामें राजा द्रुपदने द्रोणाचार्यकी मित्रताको अस्वीकार करते हुए अपमान किया। ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्यजीको यह अपमान सहन नहीं हुआ। बादमें द्रोणाचार्यने अर्जुन आदि राजकुमारोंसे राजा द्रुपदको पराजित करके आधा राज्य लिया और आधा राज्यको मित्रताके नामसे राजा द्रुपदको छोड़ दिया। यह बात राजा द्रुपदको अच्छा नहीं लगा और क्षोभ बना रहा। उन्होंने द्रोणको वध करनेवाला एक पुत्रके लिए 'याज' और 'उपयाज' नामक ऋषियोंके द्वारा यज्ञ करवाया और उस यज्ञके हवन कुण्डमें से धृष्टद्युम्न उत्पन्न हुआ; साथ-साथ द्रोपदीकी भी उत्पत्ति हुई जिससे 'याज्ञसेनी' नाम हुआ।

प्र.३८ - कौरवों यानी धृतराष्ट्रके पुत्रों और पाण्डवोंमें किस कारणसे युद्ध हो रहा है ?

उत्तर - युधिष्ठिर हस्तिनापुरके युवराज बननेके बाद दुर्योधनको सहन नहीं हुआ और किसी न किसी कारणसे आपसमें झगड़ा, अशान्ति तथा युद्धका वातावरण बना रहा।

इसलिए राज्यका विभाजन हुआ। युधिष्ठिरने अपने भागमें खाण्डवप्रस्थको स्वीकार किया जहाँ केवल वन, पत्थर, जंगल ही था और मनुष्योंका वास नहीं था; नागों का बास था । पाण्डवोंने वहाँ इन्द्रप्रस्थ नामका सुन्दर नगर बसाया।

धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधन और मामा शकुनीने छल-कपट पूर्वक द्युतक्रीड़ामें पाण्डवोंको हराया एवं राज्य इन्द्रप्रस्थ ले के जंगलमें १२ वर्ष वनवास एवं एक वर्ष गुप्त बनवास के लिए भेज दिया। तेरह वर्षके बाद जब पाण्डव वापस आये तो धृतराष्ट्र और उनके पुत्र दुर्योधनने पाण्डवोंका राज्य वापस नहीं किया यानी पाण्डवोंका अधिकार नहीं दिया। अतः युद्धका निश्चय हुआ।

युद्धक्षेत्रमें पाण्डवोंके भयंकर शंख ध्वनि जब गुञ्जने लगा तो किसका हृदय विदीर्ण यानी व्यथित होने लगा ?

महाभारत युद्धक्षेत्रमें युद्ध आरम्भमें एक ही साथ जब पाण्डवोंका शंख नाद गुञ्जने लगा तब धृतराष्ट्रके पक्षवाले राजादि योद्धाओंका, सेनाओंका एवं दुर्योधन आदि सौ पुत्रोंका हृदय विदीर्ण हो गया एवं व्यथित होने लगा।

युद्ध होनेसे पहले मोर्चा बाँधकर खड़े हुए धृतराष्ट्रके

श्रीकृष्णको अर्जुनने कहा- हे अच्युत! मेरे रथको दोनों सेनाओंके बीचमें खड़ा कीजिये और तब तक खड़ा कीजिये जब तक मैं युद्धके अभिलाषी इन विपक्षी योद्धाओंको देख लूँ कि मुझे किन-किनके साथ युद्ध करना योग्य है; क्योंकि ये राजा लोग दुर्बुद्धि दुर्योधनके हित चाहनेवाले हैं।

अर्जुनने जब दोनों सेनाओंके बीचमें स्थित ताऊ-चाचाओंको, दादा-परदादाओंको, गुरुओंको, मामाओं को, और भाई-बन्धुओंको देखा तब क्या स्थिति हुई ?
अर्जुनने जब सम्पूर्ण बन्धुओंको देखा तो उसका हृदय करूणासे भर गया और शोक करते हुए कृष्णसे कहा कि- मेरे अंग शिथिल हो रहें हैं, मुख सुखा जा रहा है, शरीरमें कम्पन तथा मेरा मन भ्रमित सा हो रहा है एवं मैं खड़ा रहनेमें समर्थ नहीं हूँ।

रणक्षेत्रमें अपने सभी सम्बन्धियोंको देखनेके बाद अर्जुनने श्रीकृष्णको युद्धके परिणामके विषयमें क्या कहा ?
हे कृष्ण! मुझे यह विजय नहीं चाहिए और न ये राज्य तथा राज्यका सुख भोग चाहिए। क्योकिं जिनके सुख भोगके

छोड़कर युद्धमें खड़े हैं। इसलिए वे सब मुझे मारने पर भी मैं इन दादा, गुरुजन, भाई बन्धुओंको मारना नहीं चाहता हूँ चाहे तीनों लोंकोका राज्य मिल जाय। मेरे अपने भाई-बन्धु धृतराष्ट्रके पुत्रोंको मारकर कैसे प्रसन्नता होगी ? हमको अवश्य पाप लगेगा। इसलिए हम मारनेके योग्य नहीं हैं।

रणक्षेत्रमें भाई-बन्धुओंको देखनेके पश्चात् अर्जुनने कुलधर्मके विषयमें कृष्णसे क्या कहा ?

रणक्षेत्रमें अर्जुनने भाई-बन्धुओंके साथ-साथ लाखों सेनाओंको युद्धके लिए डटे हुए देखनेके पश्चात् युद्धका परिणाम महाविनाशके विषयमें सोचने लगा कि परिवारके, कुलके जब प्रधान व्यक्तियोंकी मृत्यु हो जाएगी तो कुलका धर्मके विषयमें बतानेवाले नहीं रहेंगे। सनातनसे आया हुआ कुलका धर्म नष्ट जाएगा, युवा पीढ़ी पथभ्रष्ट हो जाएगी और घरमें, समाजमें अधर्म, अनीति फैल जाएगी। परिणामतः कुलकी स्त्रीयाँ पाप कर्ममें प्रवृत्त होकर दूषित हो जाएंगी एवं वर्णसकंर सन्तानको जन्म देंगी। वर्णसंकर सन्तान पितरोंका पिण्डदान, श्राद्ध, तपर्ण आदि नहीं करेंगे; जिससे कुलका धर्म नाश होगा और पितर लोगोंको अनिश्चित

शोकसे व्याकुल होकर अर्जुनने आखिरमें क्या कहा ?
श्रीकृष्णसे अर्जुनने कहा कि - धृतराष्ट्रके पुत्र निशस्त्र मुझको मार डालना मेरे लिए कल्याणकारक होगा लेकिन मैं युद्ध नहीं करूँगा। इस प्रकार कहकर बाणके साथ धनुषको छोड़कर रथमें चुपचाप बैठ गया।